International Research Journal of Management Science & Technology

IRJMST

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

महराजगंज जनपद में कृषि विकासः एक भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विश्लेषण

मनीष जायसवाल
शोध छात्र, भूगोल विभाग, डॉ० भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश

डॉ० अमित राणा
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, के० आर० पी० जी० कॉलेज मथुरा, उत्तर प्रदेश

सारांशः

महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख कृषि प्रधान जनपद है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार तथा आजीविका का आधार मुख्यतः कृषि एवं उससे सम्बद्ध गतिविधियाँ हैं। यहाँ की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, अनुकूल जलवायु, पर्याप्त वर्षा, भूजल की उपलब्धता तथा विस्तृत कृषि भूमि कृषि विकास के लिए अनुकूल प्राकृतिक आधार प्रदान करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में महराजगंज जनपद में कृषि विकास के स्थानिक एवं क्षेत्रीय स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में कृषि क्षेत्र का विस्तार केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं है, बल्कि सिंचाई, उन्नत बीज, उर्वरकों, कृषि यंत्रीकरण, बाजार एवं परिवहन सुविधाओं तथा कृषकों की आर्थिक क्षमता जैसे कारक भी कृषि विकास की दिशा और तीव्रता को प्रभावित करते हैं। जनपद में धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन तथा तिलहन प्रमुख फसलें हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में सब्जियों एवं अन्य नकदी फसलों का भी विस्तार हुआ है। कृषि फसलों के वितरण, फसल विविधीकरण, सिंचाई की स्थिति तथा कृषि उत्पादकता में विकासखण्डों के मध्य स्पष्ट क्षेत्रीय भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। जहाँ बेहतर सिंचाई, परिवहन एवं बाजार सुविधाओं वाले क्षेत्रों में कृषि की गहनता और उत्पादकता अपेक्षाकृत अधिक है, वहीं सीमित सिंचाई, छोटी एवं विखंडित जोत, पूँजी की कमी तथा विपणन संबंधी समस्याओं वाले क्षेत्रों में कृषि विकास अपेक्षाकृत धीमा है। कृषि यंत्रीकरण एवं आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रसार ने उत्पादन क्षमता में वृद्धि की है, किंतु इसका लाभ सभी क्षेत्रों एवं कृषक वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। अतः महराजगंज जनपद में कृषि विकास एक बहुआयामी एवं असमान क्षेत्रीय प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। संतुलित कृषि विकास के लिए सिंचाई विस्तार, कृषि विविधीकरण, आधुनिक तकनीकी ज्ञान, संस्थागत ऋण, भंडारण एवं विपणन सुविधाओं तथा लघु एवं सीमांत कृषकों की आर्थिक क्षमता को सुदृढ़ करना आवश्यक है। इससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ ग्रामीण आय, रोजगार और क्षेत्रीय विकास को भी गति प्रदान की जा सकती है।

सूचक शब्दः उत्पादकता, कृषि विकास, क्षेत्रीय विकास, क्षेत्रीय विकास, फसल।

परिचयः

कृषि मानव सभ्यता के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का आधार रही है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार, आय, खाद्य सुरक्षा तथा सामाजिक संरचना का प्रमुख आधार है। देश की बड़ी ग्रामीण आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं कृषि–आधारित गतिविधियों पर निर्भर है। इसलिए कृषि के विकास का अध्ययन क्षेत्रीय विकास, ग्रामीण जीवन–स्तर तथा आर्थिक परिवर्तन को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषि विकास पर प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ भूमि उपयोग, सिंचाई, कृषि तकनीक, उन्नत बीज, उर्वरक, यंत्रीकरण, बाजार, परिवहन तथा संस्थागत सुविधाओं का भी प्रभाव पड़ता है। महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है। इसकी भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा, समतल भू–आकृति तथा जल संसाधनों की उपलब्धता कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं। जनपद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है और धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन तथा तिलहन जैसी फसलें कृषि व्यवस्था का प्रमुख हिस्सा हैं। इसके साथ ही सब्जियों तथा अन्य व्यावसायिक फसलों का उत्पादन भी स्थानीय कृषि अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करता है। महराजगंज में कृषि विकास का स्वरूप सभी क्षेत्रों में समान नहीं

है। विभिन्न विकासखण्डों में भूमि उपयोग, सिंचाई सुविधाओं, फसल प्रतिरूप, कृषि उत्पादकता, यंत्रीकरण तथा कृषि से संबंधित आधारभूत सुविधाओं में भिन्नता पाई जाती है। कुछ क्षेत्रों में बेहतर सिंचाई एवं बाजार सुविधाओं के कारण कृषि अधिक गहन एवं व्यावसायिक स्वरूप ग्रहण कर रही है, जबकि अन्य क्षेत्रों में छोटी जोत, सीमित पूँजी, तकनीकी ज्ञान की कमी, विपणन संबंधी कठिनाइयों तथा प्राकृतिक जोखिमों के कारण कृषि विकास अपेक्षाकृत धीमा है। इस प्रकार महराजगंज जनपद में कृषि विकास का अध्ययन केवल उत्पादन वृद्धि तक सीमित न होकर उसके स्थानिक वितरण, क्षेत्रीय विषमता तथा कृषि को प्रभावित करने वाले भौगोलिक एवं आर्थिक कारकों के व्यापक विश्लेषण से जुड़ा है। कृषि विकास की इन क्षेत्रीय विविधताओं को समझना संतुलित ग्रामीण विकास और स्थानीय कृषि अर्थव्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र:

भौगोलिक दृष्टि से महराजगंज जनपद उत्तर प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण सीमावर्ती जनपद है। इसका विस्तार लगभग 25°50′ से 26°20′ उत्तरी अक्षांश तथा 83°25′ से 84°20′ पूर्वी देशांतर के मध्य है। समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई लगभग 66 मीटर है तथा समतल भू–आकृति के कारण यह गंगा के मैदानी क्षेत्र का हिस्सा है। जनपद की उत्तरी सीमा नेपाल से लगी हुई है और लगभग 83 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा इसे सामरिक, व्यापारिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट बनाती है। इसके पूर्व में कुशीनगर, पश्चिम में सिद्धार्थनगर, दक्षिण में गोरखपुर तथा दक्षिण–पूर्व में संत कबीर नगर जनपद स्थित हैं। लगभग 2,952 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में विस्तृत महराजगंज का अधिकांश भू–भाग समतल एवं उपजाऊ है। तराई क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं, पर्याप्त वर्षा, अनुकूल जलवायु तथा उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के कारण यहाँ कृषि के विकास की व्यापक संभावनाएँ हैं। यही प्राकृतिक आधार जनपद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कृषि–प्रधान स्वरूप प्रदान करता है। जनगणना 2011 के अनुसार, जनपद की कुल जनसंख्या 26,65,292 थी, जिसमें 13,17,057 पुरुष तथा 13,48,235 महिलाएँ थीं। लगभग 903 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व वाला यह जनपद ग्रामीण बस्तियों और कृषि–आधारित आजीविका की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार इसकी भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक संसाधन कृषि विकास के अध्ययन के लिए विशेष आधार प्रस्तुत करते हैं।

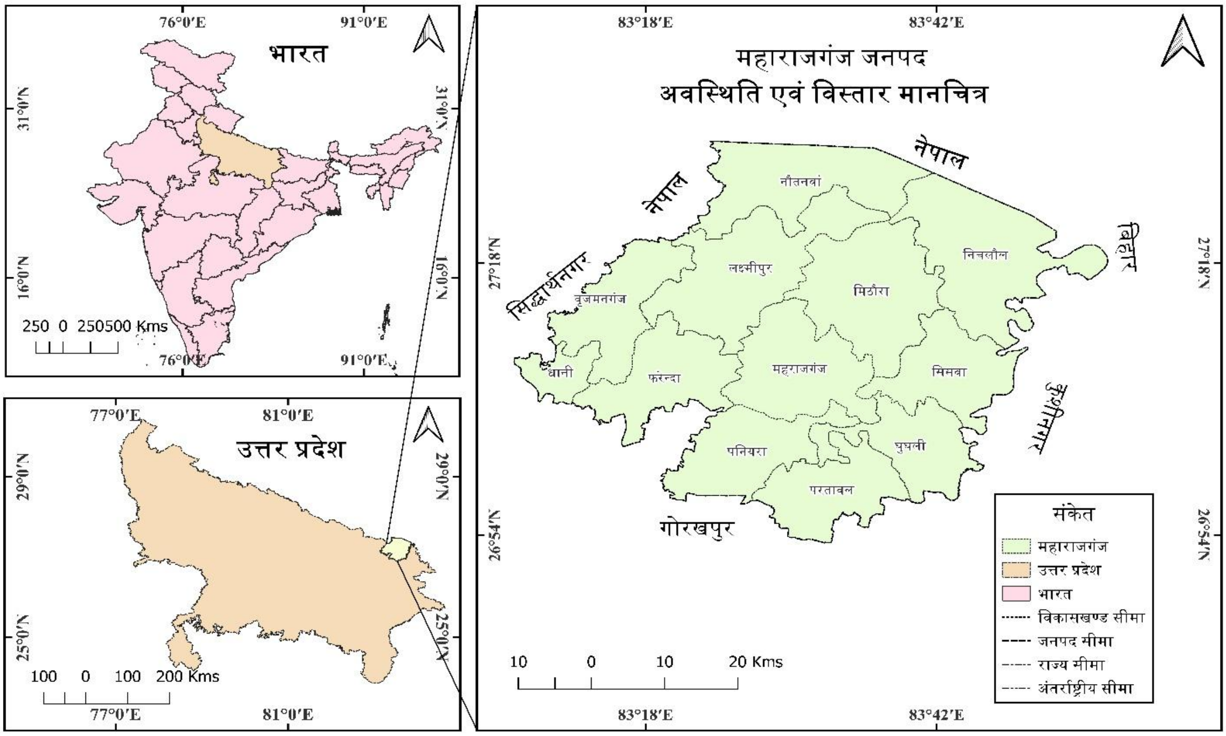

मानचित्र संख्या 1: महराजगंज जनपद की स्थिति एवं विस्तार।

उद्देश्य:

- महराजगंज जनपद में फसल विकास की वर्तमान स्थिति एवं स्थानिक स्वरूप का अध्ययन करना।
- महराजगंज जनपद में प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में समयानुसार होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- विभिन्न विकासखण्डों के मध्य कृषि विकास की क्षेत्रीय विषमताओं एवं असमानताओं को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।
- महराजगंज जनपद में कृषि विकास की संभावनाओं, समस्याओं एवं चुनौतियों का मूल्यांकन करते हुए संतुलित एवं सतत कृषि विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

आंकड़ा स्रोत तथा शोध विधि तंत्र:

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का प्रमुख आधार द्वितीयक आँकड़े हैं, जिनके माध्यम से जनपद में कृषि के विकास, उसके स्थानिक स्वरूप, क्षेत्रीय विषमताओं तथा समयानुसार हुए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए कृषि क्षेत्रफल, फसल प्रतिरूप, उत्पादन, सिंचाई तथा कृषि से संबंधित अन्य सूचकों से संबंधित आँकड़ों को विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों से संकलित किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के प्रमुख स्रोतों में भारत की जनगणना, उत्तर प्रदेश कृषि विभाग, कृषि निदेशालय, अर्थ एवं संख्या विभाग, उत्तर प्रदेश, जिला सांख्यिकी पत्रिका, जिला जनगणना पुस्तिका, कृषि सांख्यिकी संबंधी सरकारी प्रतिवेदन, आर्थिक एवं सांख्यिकीय प्रकाशन तथा संबंधित विभागीय रिपोर्टें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त कृषि एवं ग्रामीण विकास से संबंधित प्रकाशित शोध–पत्रों, शोध–प्रबंधों, पुस्तकों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का भी उपयोग किया गया है। विभिन्न वर्षों के आँकड़ों के आधार पर कृषि विकास की प्रवृत्तियों एवं परिवर्तन की दिशा को समझने का प्रयास किया गया है। संकलित आँकड़ों को व्यवस्थित एवं तुलनीय बनाने के लिए विकासखण्डवार एवं वर्षवार वर्गीकरण किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण में प्रतिशत, औसत, वृद्धि दर तथा तुलनात्मक विश्लेषण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है। कृषि विकास के विभिन्न घटकों के मध्य क्षेत्रीय अंतर को स्पष्ट करने के लिए सारणियों, बार–ग्राफ तथा अन्य आरेखों का प्रयोग किया गया है। स्थानिक विश्लेषण के माध्यम से कृषि संसाधनों, फसल प्रतिरूप, सिंचाई एवं उत्पादकता के विकासखण्डवार वितरण को स्पष्ट किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण:

1. **फसल प्रतिरूप में परिवर्तन:**

महराजगंज जनपद में वर्ष 2013–14 से 2023–24 के मध्य सकल बोए गए क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न फसलों के क्षेत्रफल में अपेक्षाकृत सीमित, किंतु महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। आँकड़ों से स्पष्ट है कि धान और गेहूँ पूरे दशक में प्रमुख फसलें बनी रहीं। वर्ष 2013–14 में गेहूँ का हिस्सा 41.25 प्रतिशत था, जो 2023–24 में घटकर 39.75 प्रतिशत रह गया, अर्थात् 1.50 प्रतिशत की कमी हुई। इसके विपरीत धान का क्षेत्रफल 46.13 प्रतिशत से बढ़कर 46.37 प्रतिशत हो गया। धान के क्षेत्रफल में मामूली वृद्धि का प्रमुख कारण पूर्वी उत्तर प्रदेश की अनुकूल जलवायु, मानसूनी वर्षा, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार तथा धान के लिए उपयुक्त जलोढ़ मिट्टी है। गेहूँ में कमी का कारण कृषि क्षेत्र में धीरे–धीरे फसल विविधीकरण तथा कुछ क्षेत्रों में अन्य फसलों के विस्तार को माना जा सकता है।

तालिका संख्या 1: महराजगंज जनपद में विभिन्न फसलों का क्षेत्रफल (सकल बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत)।

फसल	2013–14	2023–24
गेहूँ	41.25	39.75
धान	46.13	46.37
मक्का	0.10	0.44
गन्ना	4.88	4.54
दलहन	3.18	4.06
तिलहन	1.32	1.36
अन्य फसल	3.14	3.48
कुल	100	100

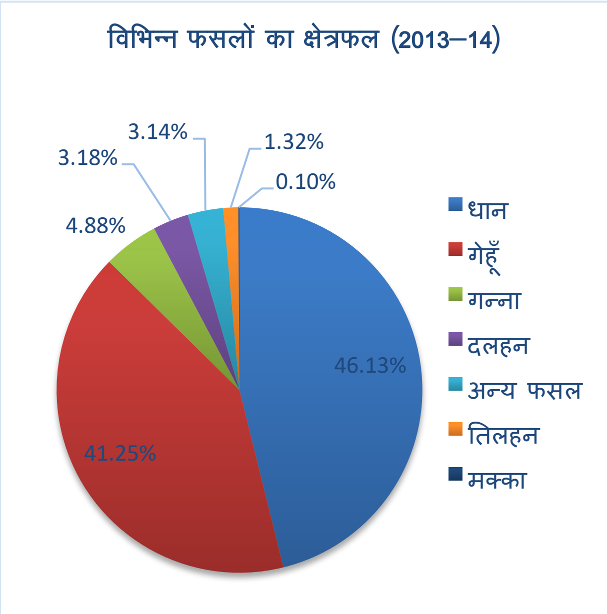

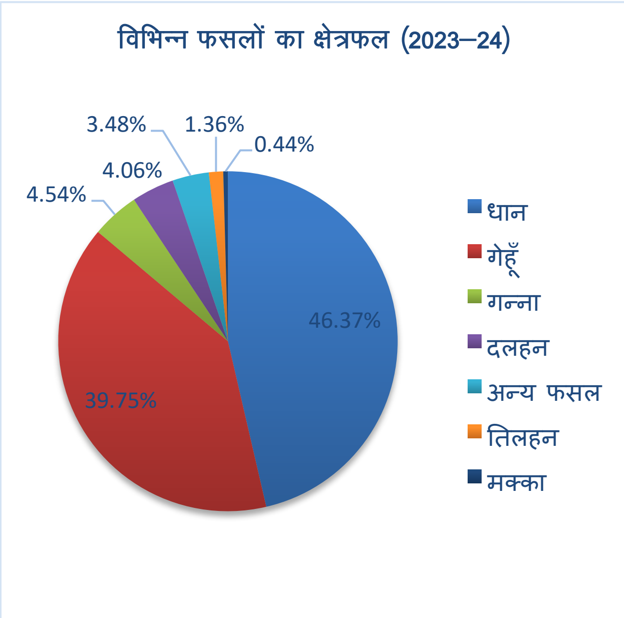

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, महराजगंज जनपद, 2014–2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

आरेख संख्या 1: महराजगंज जनपद में विभिन्न फसलों का क्षेत्रफल (सकल बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत)।

मक्का के क्षेत्रफल में सबसे उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसका हिस्सा 0.10 प्रतिशत से बढ़कर 0.44 प्रतिशत हो गया। यह परिवर्तन मक्का की बढ़ती बाजार मांग, पशु–चारा एवं खाद्य उद्योग में उपयोग तथा अपेक्षाकृत कम अवधि में तैयार होने वाली फसल के रूप में इसकी उपयोगिता से संबंधित है। दलहन का हिस्सा भी 3.18 प्रतिशत से बढ़कर 4.06 प्रतिशत हुआ। इसका प्रमुख कारण मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, कम जल आवश्यकता तथा दलहनी फसलों की बढ़ती मांग के प्रति कृषकों की रुचि हो सकता है।

इसके विपरीत गन्ने का क्षेत्रफल 4.88 प्रतिशत से घटकर 4.54 प्रतिशत हो गया। इसकी संभावित वजह गन्ने की अपेक्षाकृत अधिक जल आवश्यकता, लंबी अवधि की फसल होने के कारण भूमि के लंबे समय तक बंधे रहने तथा वैकल्पिक फसलों की ओर कृषकों का आंशिक झुकाव है। तिलहन में 1.32 प्रतिशत से 1.36 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई, जबकि अन्य फसलों का हिस्सा 3.14 प्रतिशत से बढ़कर 3.48 प्रतिशत हो गया। समग्रतः दशक के दौरान महराजगंज की फसल संरचना में धान–गेहूँ का प्रभुत्व कायम रहते हुए सीमित फसल विविधीकरण दिखाई देता है। दलहन, मक्का तथा अन्य फसलों की बढ़ती हिस्सेदारी कृषि व्यवस्था में विविधता और बाजारोन्मुखता के क्रमिक विस्तार का संकेत देती है।

तालिका संख्या 2: महराजगंज जनपद में विकासखण्डवार फसल प्रतिरूप, 2014–2024 (प्रतिशत में)।

विकास खण्ड	सकल बोए गए क्षेत्रफल (हे० में)		धान		गेहूँ		मक्का		गन्ना		दलहन		तिलहन		अन्य फसल	
	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24	2013–14	2023–24
नौतनवां	33097	42549	33.17	41.09	36.13	29.97	0.10	0.30	1.36	5.99	4.66	2.95	122	1.05	23.36	18.65
लक्ष्मीपुर	34448	64207	49.95	38.56	41.98	42.10	0.07	0.20	0.98	0.55	2.07	1.96	1.18	0.71	3.77	15.92
निचलौल	36858	27300	45.90	46.76	35.86	36.91	0.13	0.49	9.49	6.39	3.34	4.57	0.99	1.42	4.29	3.46
मिठौरा	34451	24325	51.10	40.90	3935	42.86	0.10	0.53	3.96	4.83	4.97	7.41	1.11	1.41	4.41	2.06
सिसवा	29471	24363	43.31	43.86	34.89	37.77	0.11	0.53	10.54	12.52	2.86	3.18	1.26	1.35	7.03	0.79
वृजमनगंज	28862	37162	44.92	35.40	43.54	35.12	0.08	0.35	3.22	2.15	1.46	3.68	1.80	1.26	4.98	22.04
महराजगंज	32267	21100	49.85	37.62	40.91	44.93	0.08	0.62	3.37	4.45	3.81	4.81	1.04	1.38	0.94	6.19
घुघली	31645	24472	35.28	46.45	32.44	43.53	0.10	0.53	1.11	2.45	3.93	5.03	1.16	1.32	25.98	0.69
पनियरा	31560	18145	48.90	46.46	41.77	35.42	0.10	0.72	1.49	2.23	2.26	3.64	1.66	2.34	3.82	9.19
परतावल	31962	23914	42.07	41.32	43.94	42.41	0.10	054	6.50	7.49	2.63	3.93	1.15	1.33	3.61	2.98
धानी	10528	33977	38.39	41.56	44.26	45.31	024	0.38	2.53	0.67	2.14	3.53	2.37	0.63	10.07	7.92
फरेन्दा	26456	44418	39.34	43.83	45.91	38.37	0.11	0.29	1.69	0.87	1.54	3.04	1.76	0.88	9.65	12.72
कुल	361664	390450	46.13	46.37	41.25	39.75	0.10	0.44	4.88	4.54	3.18	4.06	1.32	1.36	3.14	3.48

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, महराजगंज जनपद, 2014–2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

महराजगंज जनपद में वर्ष 2013–14 से 2023–24 के बीच फसल प्रतिरूप में महत्वपूर्ण क्षेत्रीय परिवर्तन दिखाई देता है। कुल सकल बोया गया क्षेत्रफल 3,61,664 हे० से बढ़कर 3,90,450 हे० हो गया, अर्थात लगभग 7.96 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसके बावजूद फसलों के क्षेत्रीय हिस्से में विकासखण्डवार काफी भिन्नता रही। समग्र स्तर पर धान का हिस्सा 46.13 प्रतिशत से बढ़कर 46.37 प्रतिशत हुआ, जबकि गेहूँ 41.25 प्रतिशत से घटकर 39.75 प्रतिशत रह गया। इससे स्पष्ट है कि जनपद की कृषि व्यवस्था में धान–गेहूँ की प्रधानता कायम रहते हुए सीमित फसल विविधीकरण हुआ है।

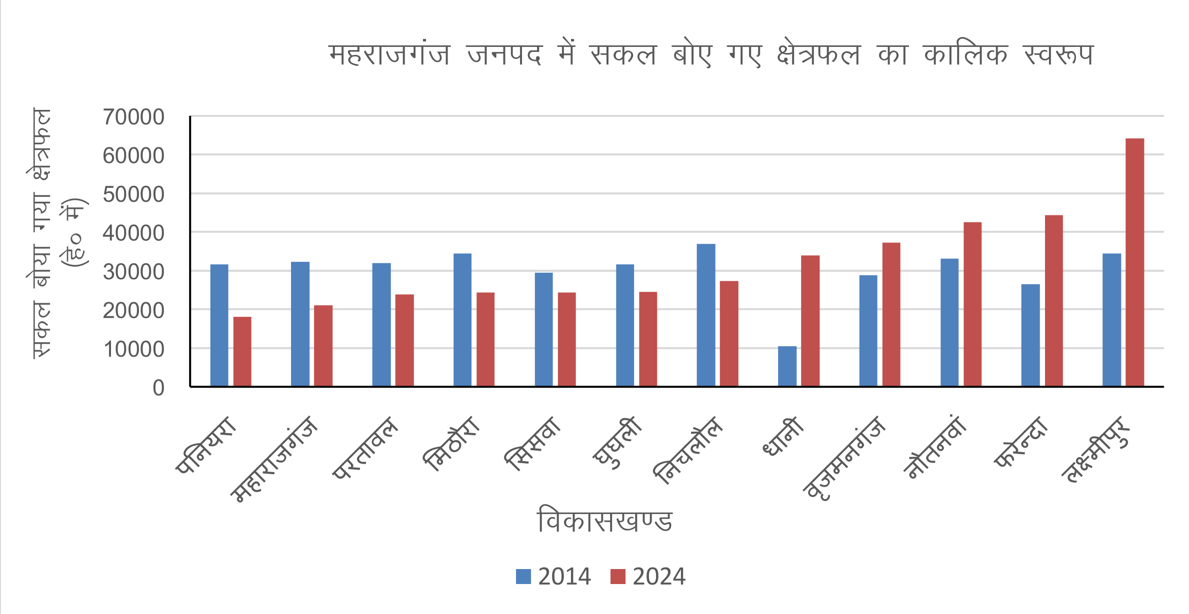

आरेख संख्या 2: महराजगंज जनपद में सकल बोए गए क्षेत्रफल का कालिक स्वरूप (2014–2024)।

धान के क्षेत्रफल में सर्वाधिक वृद्धि घुघली विकासखण्ड में हुई, जहाँ इसका हिस्सा 35.28 प्रतिशत से बढ़कर 46. 45 प्रतिशत हो गया। नौतनवां में भी धान 33.17 प्रतिशत से बढ़कर 41.09 प्रतिशत तथा फरेन्दा में 39.34 प्रतिशत से बढ़कर 43.83 प्रतिशत हुआ। इसके विपरीत लक्ष्मीपुर में धान 49.95 प्रतिशत से घटकर 38.56 प्रतिशत और मिठौरा में 51.10 प्रतिशत से घटकर 40.90 प्रतिशत रह गया। घुघली, नौतनवां एवं फरेन्दा में वृद्धि का प्रमुख कारण पर्याप्त मानसूनी वर्षा, सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता तथा धान के लिए अनुकूल जलोढ़ मिट्टी है। वहीं लक्ष्मीपुर और मिठौरा में धान के हिस्से में कमी संभवतः दलहन, तिलहन एवं अन्य फसलों की ओर आंशिक फसल विविधीकरण से जुड़ी है।

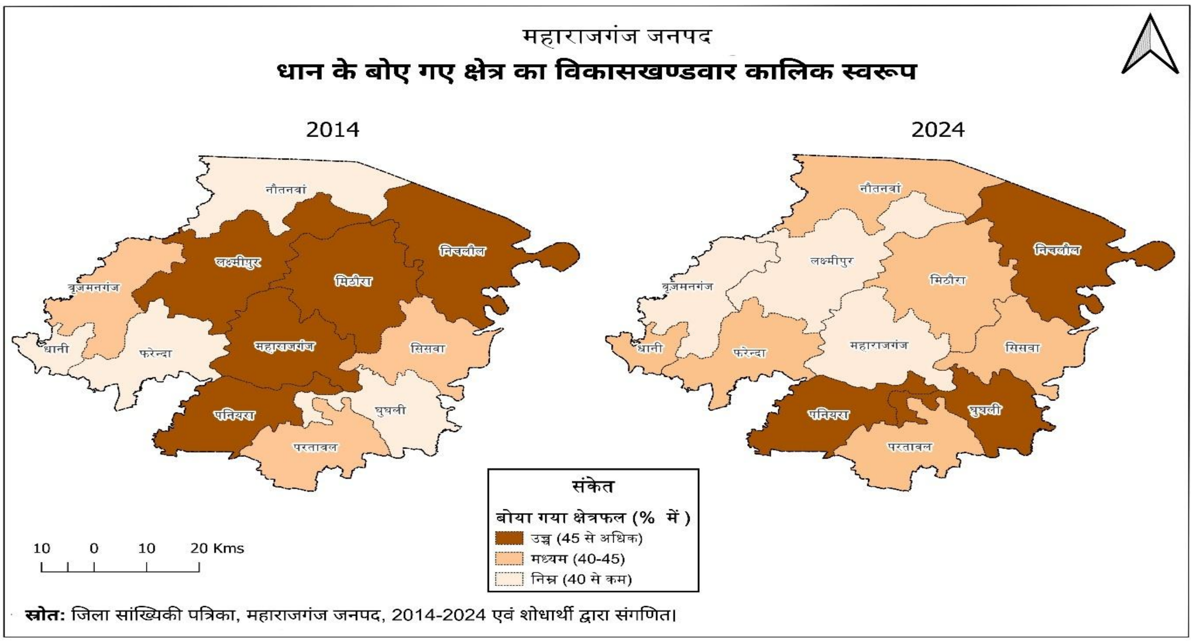

मानचित्र संख्या 2: महराजगंज जनपद में धान के बोए गए क्षेत्र का विकासखण्डवार कालिक स्वरूप।

गेहूँ में सर्वाधिक वृद्धि महराजगंज विकासखण्ड में 40.91 प्रतिशत से 44.93 प्रतिशत तथा घुघली में 32.44 प्रतिशत से 43.53 प्रतिशत हुई। इसके विपरीत नौतनवां में 36.13 प्रतिशत से घटकर 29.97 प्रतिशत और वृजमनगंज में 43.54 प्रतिशत से 35.12 प्रतिशत रह गया। गेहूँ की वृद्धि वाले क्षेत्रों में रबी मौसम की सिंचाई, नलकूपों की उपलब्धता तथा गेहूँ की स्थिर बाजार मांग महत्वपूर्ण कारक रहे होंगे।

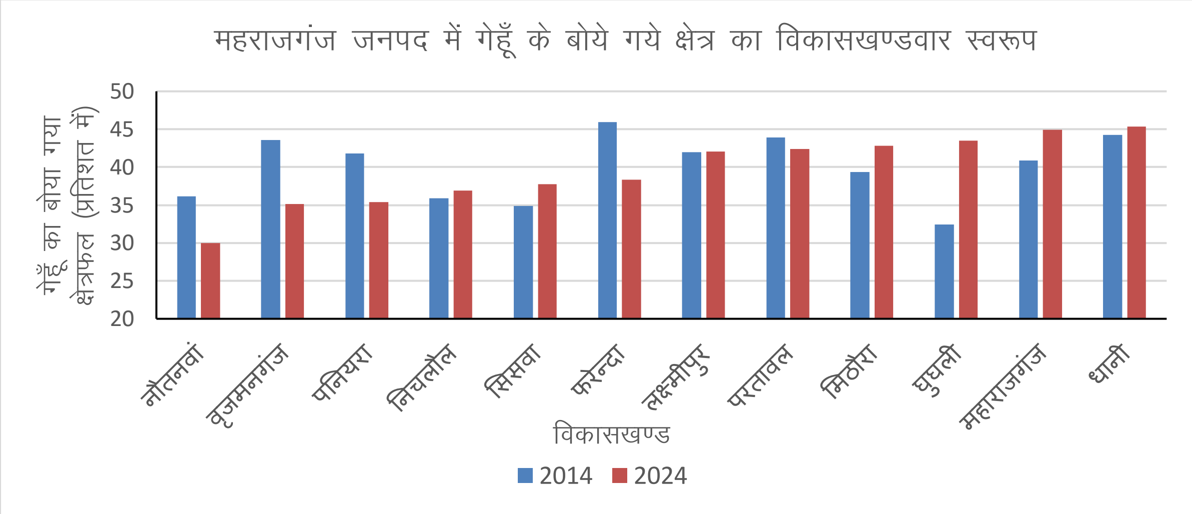

आरेख संख्या 3: महराजगंज जनपद में गेहूँ के बोये गये क्षेत्र का विकासखण्डवार स्वरूप (2014–2024)।

मक्का का हिस्सा लगभग सभी विकासखण्डों में बढ़ा है। विशेष रूप से महराजगंज में 0.08 प्रतिशत से 0.62 प्रतिशत, पनियरा में 0.10 प्रतिशत से 0.72 प्रतिशत तथा परतावल में 0.10 प्रतिशत से 0.54 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसका संबंध कम अवधि वाली फसल, पशु–चारे की मांग तथा बाजार में बढ़ती उपयोगिता से जोड़ा जा सकता है।

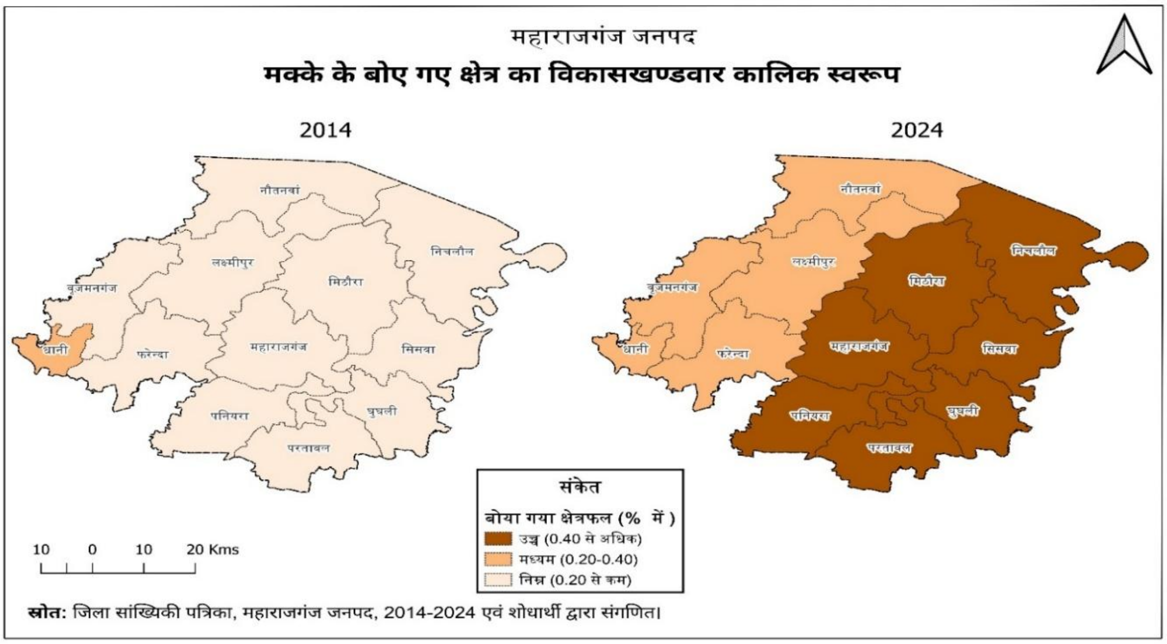

मानचित्र संख्या 3: महराजगंज जनपद में मक्के के बोए गए क्षेत्र का विकासखण्डवार कालिक स्वरूप।

गन्ने में क्षेत्रीय अंतर स्पष्ट है। सिसवा में इसका हिस्सा 10.54 प्रतिशत से बढ़कर 12.52 प्रतिशत तथा परतावल में 6.50 से 7.49 प्रतिशत हुआ, जबकि नौतनवां में 1.36 प्रतिशत से 5.99 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दूसरी ओर लक्ष्मीपुर, वृजमनगंज, धानी एवं फरेन्दा में गन्ने का हिस्सा घटा। गन्ने की वृद्धि का कारण अपेक्षाकृत लाभकारी नकदी फसल, चीनी मिलों एवं बाजार तक पहुँच और सिंचाई है, जबकि कमी वाले क्षेत्रों में अधिक जल आवश्यकता एवं लंबी अवधि की फसल होने के कारण कृषकों ने वैकल्पिक फसलों को प्राथमिकता दी प्रमुख कारण हैं।

दलहन में लगभग सभी विकासखण्डों में वृद्धि हुई। मिठौरा में यह 4.97 प्रतिशत से बढ़कर 7.41 प्रतिशत, महराजगंज में 3.81 प्रतिशत से 4.81 प्रतिशत तथा घुघली में 3.93 प्रतिशत से 5.03 प्रतिशत हुआ। इसका प्रमुख कारण कम सिंचाई आवश्यकता, मिट्टी में नाइट्रोजन संवर्धन तथा दलहन की बढ़ती मांग है। तिलहन में भी अधिकांश क्षेत्रों में मामूली वृद्धि देखी गई। समग्रतः महराजगंज का फसल प्रतिरूप धान–गेहूँ प्रधान कृषि से धीरे–धीरे अधिक विविधीकृत कृषि व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। सिंचाई, बाजार पहुँच, मिट्टी की प्रकृति, फसल की लाभप्रदता, जल आवश्यकता तथा सरकारी कृषि प्रोत्साहन योजनाएँ इस स्थानिक परिवर्तन के प्रमुख निर्धारक रहे हैं। विशेष रूप से दलहन, मक्का एवं कुछ विकासखण्डों में गन्ने का विस्तार भविष्य में कृषि के अधिक बाजारोन्मुख एवं विविध स्वरूप की संभावना को दर्शाता है।

विकासखण्ड	क्षेत्रफल				उत्पादन				परिवर्तन (क्षेत्रफल में)	परिवर्तन (कुन्तल में)
	2014		2024		2014		2024			
	(हे० में)	(प्रतिशत में)	(हे० में)	(प्रतिशत में)	(कु० में)	(प्रतिशत में)	(कु० में)	(प्रतिशत में)		
नौतनवां	0.00	0.00	211.60	8.89	0.00	0.00	8887.20	8.87	211.60	8887.20
लक्ष्मीपुर	1.00	0.84	166.60	7.01	12.00	1.48	6997.20	6.98	165.60	6985.60
निचलौल	15.00	12.60	216.21	9.09	153.00	18.82	9080.82	9.06	211.21	8927.82
मिठौरा	4.00	3.36	255.40	10.74	40.00	4.92	10726.80	10.71	251.40	10686.80
सिसवा	0.00	0.00	217.76	9.15	0.00	0.00	9145.92	9.13	217.76	9145.92
वृजमनगंज	0.00	0.00	166.10	6.98	0.00	0.00	6976.20	6.96	166.10	6976.20
महराजगंज	11.00	9.25	202.82	8.53	114.00	14.02	8518.44	8.51	191.82	8404.44
घुघली	10.00	8.39	193.79	8.15	100.00	12.30	8139.18	8.12	183.79	8039.18
पनियरा	2.00	1.68	187.59	7.88	27.00	3.32	7878.78	7.86	185.59	7851.78
परतावल	15.00	12.59	177.10	7.44	152.00	18.69	7438.20	7.42	162.10	7286.20
धानी	60.05	50.45	256.75	10.79	200.00	24.60	11068.90	11.05	196.70	10868.90
फरेन्दा	1.00	0.84	127.20	5.35	15.00	1.85	5342.40	5.33	126.20	5327.40
कुल	119.05	100	2378.92	100	813.00	100	100200.04	100	2259.87	99387.04

2. मत्स्य पालनः

महराजगंज जनपद में वर्ष 2014 से 2024 के मध्य मत्स्य पालन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। कुल मत्स्य पालन क्षेत्रफल 119.05 हे० से बढ़कर 2,378.92 हे० हो गया, जबकि उत्पादन 813 कुंतल से बढ़कर 1,00,200.04 कुंतल पहुँच गया। इस प्रकार मत्स्य पालन जनपद की कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था में उभरती हुई सहायक गतिविधि के रूप में सामने आया है। क्षेत्रफल में यह तीव्र वृद्धि मुख्यतः तालाबों के विकास, अनुपयोगी अथवा निम्न कृषि भूमि का मत्स्य तालाबों में रूपांतरण, जल संसाधनों की उपलब्धता तथा मत्स्य पालन को प्रोत्साहित करने वाली सरकारी योजनाओं के विस्तार से संबंधित मानी जा सकती है।

तालिका संख्या 3: महराजगंज जनपद में मत्स्य पालन का विकासखण्डवार स्वरुप (2014–2024)।

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, महराजगंज जनपद, 2014–2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

विकासखण्डवार स्थिति में धानी सबसे प्रमुख मत्स्य क्षेत्र के रूप में उभरता है। यहाँ मत्स्य क्षेत्रफल 60.05 हे० से बढ़कर 256.75 हे० तथा उत्पादन 200 कुंतल से बढ़कर 11,068.90 कुंतल हुआ। इसी प्रकार मिठौरा में क्षेत्रफल 4 हे० से बढ़कर 255.40 हे० और उत्पादन 40 कुंतल से बढ़कर 10,726.80 कुंतल हुआ। निचलौल में क्षेत्रफल 216.21 हे० तथा उत्पादन 9,080.82 कुंतल और सिसवा में क्षेत्रफल 217.76 हे० तथा उत्पादन 9,145.92 कुंतल रहा। इन क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक तालाब एवं जलाशय, पर्याप्त जल उपलब्धता तथा मत्स्य पालन के लिए अनुकूल स्थानीय परिस्थितियाँ प्रमुख कारण हो सकती हैं।

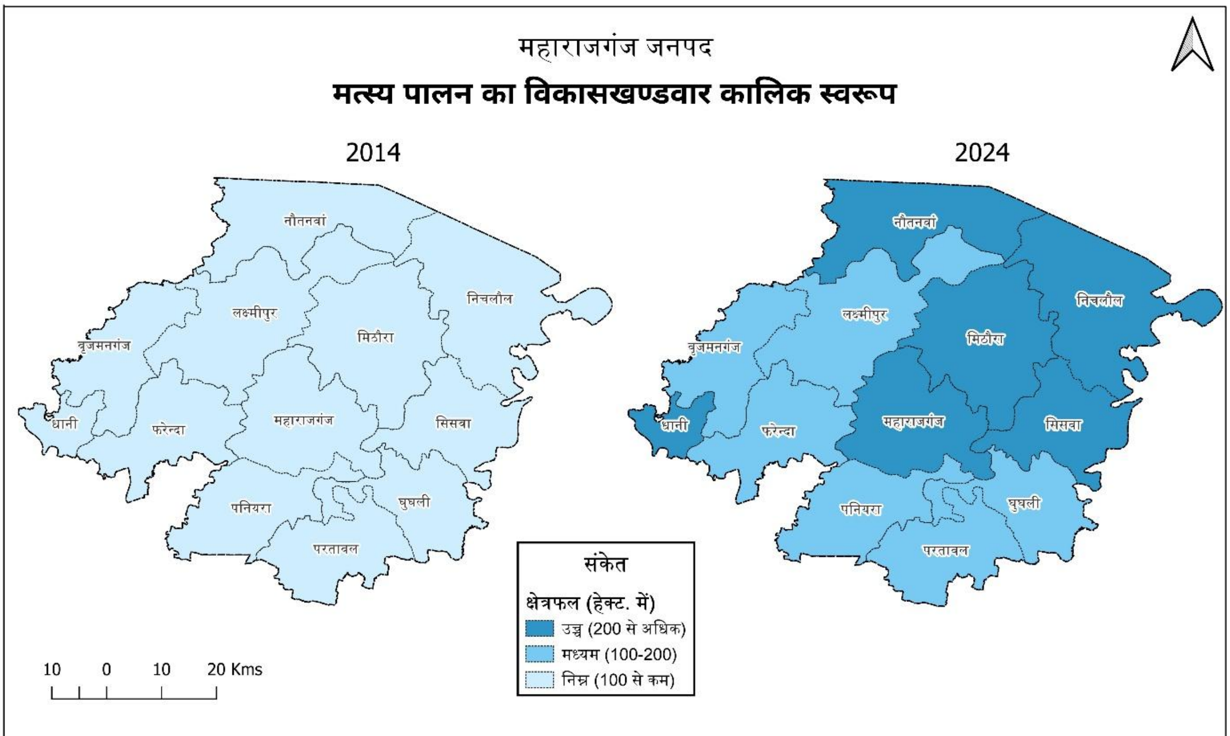

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, महाराजगंज जनपद, 2014-2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

मानचित्र संख्या 4: महराजगंज जनपद में मत्स्य पालन का विकासखण्डवार कालिक स्वरूप।

दूसरी ओर नौतनवां, सिसवा एवं वृजमनगंज में 2014 में मत्स्य पालन क्षेत्रफल शून्य था, किंतु 2024 में क्रमशः 211.60, 217.76 और 166.10 हे० क्षेत्र में इसका विस्तार हुआ। यह परिवर्तन नए तालाबों के निर्माण, मत्स्य पालन के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा सरकारी वित्तीय एवं तकनीकी सहायता की पहुँच का संकेत है। महराजगंज में भी क्षेत्रफल 11 हे० से बढ़कर 202.82 हे० तथा उत्पादन 114 से बढ़कर 8,518.44 कुंतल हुआ। समग्रतः उत्पादन में क्षेत्रफल की तुलना में कहीं अधिक तीव्र वृद्धि हुई है। इसका प्रमुख कारण केवल जलक्षेत्र का विस्तार नहीं, बल्कि उन्नत मत्स्य बीज, वैज्ञानिक पालन तकनीक, तालाब प्रबंधन, कृत्रिम आहार तथा उच्च उत्पादक प्रजातियों के प्रयोग का बढ़ना भी माना जा सकता है। अतः 2014–2024 के दौरान मत्स्य पालन का विकास महराजगंज में ग्रामीण आय, रोजगार एवं कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने वाली महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में उभरा है।

3. पशुपालनः

महराजगंज जनपद में 2014 से 2024 के बीच पशुधन संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। कुल पशुओं की संख्या 6,74,355 से घटकर 5,06,663 रह गई, अर्थात लगभग 24.9 प्रतिशत की कमी हुई। इसके बावजूद पशुधन संरचना में बकरा–बकरी तथा भैंस का महत्व बढ़ा है। गायों का हिस्सा 23.89 प्रतिशत से घटकर 13.11 प्रतिशत, जबकि भैंसों का हिस्सा 30.36 प्रतिशत से बढ़कर 35.65 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार बकरा–बकरी 41.36 प्रतिशत से बढ़कर 49.91 प्रतिशत हो गए। अन्य पशुओं की हिस्सेदारी 4.39 प्रतिशत से घटकर केवल 1.33 प्रतिशत रह गई।

तालिका संख्या 5: महराजगंज जनपद में पशुपालन का विकासखण्डवार स्वरुप, 2014–2024 (प्रतिशत में)।

विकासखण्ड	गाय		भैंस		बकरा एवं बकरी		अन्य पशु		कुल पशु (संख्या में)	
	2014	2024	2014	2024	2014	2024	2014	2024	2014	2024
नौतनवां	30.51	13.18	23.24	33.23	36.71	50.66	9.54	2.93	65754	43172
लक्ष्मीपुर	29.27	12.57	27.25	35.19	39.36	50.81	4.12	1.43	78409	55049
निचलौल	24.60	21.47	30.63	32.29	40.87	45.15	3.90	1.10	72320	59335
मिठौरा	23.93	12.10	21.01	24.18	50.00	62.36	5.07	1.36	49000	35600
सिसवा	23.27	16.37	21.27	23.75	49.25	58.09	6.20	1.78	47600	36573
वृजमनगंज	23.49	08.15	29.87	36.22	44.29	54.69	2.35	0.94	55485	40725
महराजगंज	19.43	10.19	36.38	40.23	40.79	48.57	3.40	1.01	47996	36531
घुघली	11.87	07.89	29.82	30.79	55.35	60.56	2.99	0.86	62365	51657
पनियरा	21.88	12.11	33.28	37.84	40.44	48.60	4.40	1.45	54480	41082
परतावल	26.42	10.42	30.61	37.56	29.72	51.00	3.25	1.02	60515	42707
धानी	26.00	14.80	51.94	61.91	18.30	21.71	3.76	1.58	14658	11198
फरेन्दा	25.17	14.87	47.82	55.46	24.38	28.39	2.63	1.01	52571	40918
कुल	23.89	13.11	30.36	35.65	41.36	49.91	4.39	1.33	674355	506663

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, महराजगंज जनपद, 2014–2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

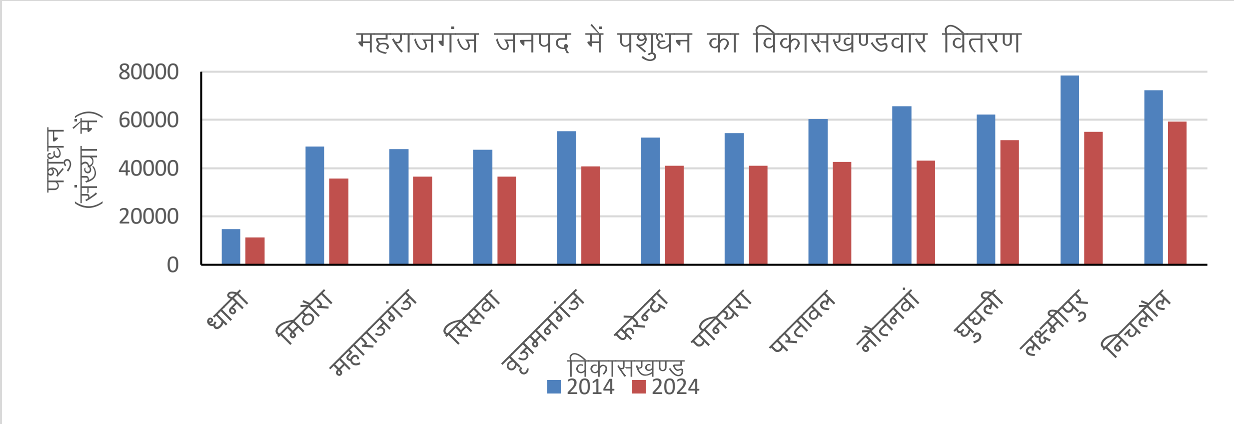

आरेख संख्या 4: महराजगंज जनपद में पशुधन का विकासखण्डवार वितरण (2014–2024)।

विकासखण्डवार गायों में सबसे अधिक कमी वृजमनगंज में 23.49 प्रतिशत से 8.15 प्रतिशत तथा नौतनवां में 30. 51 प्रतिशत से 13.18 प्रतिशत हुई। इसके विपरीत घुघली में गायों का हिस्सा 11.87 प्रतिशत से घटकर 7.89 प्रतिशत हुआ, जो अपेक्षाकृत कम गिरावट है। गायों की हिस्सेदारी में कमी का प्रमुख कारण दुग्ध उत्पादन में भैंसों की अधिक व्यावसायिक उपयोगिता, उच्च दुग्ध वसा के कारण बाजार में भैंस के दूध की मांग तथा छोटे किसानों द्वारा कम उत्पादक पशुओं को रखने की प्रवृत्ति में कमी हो सकता है।

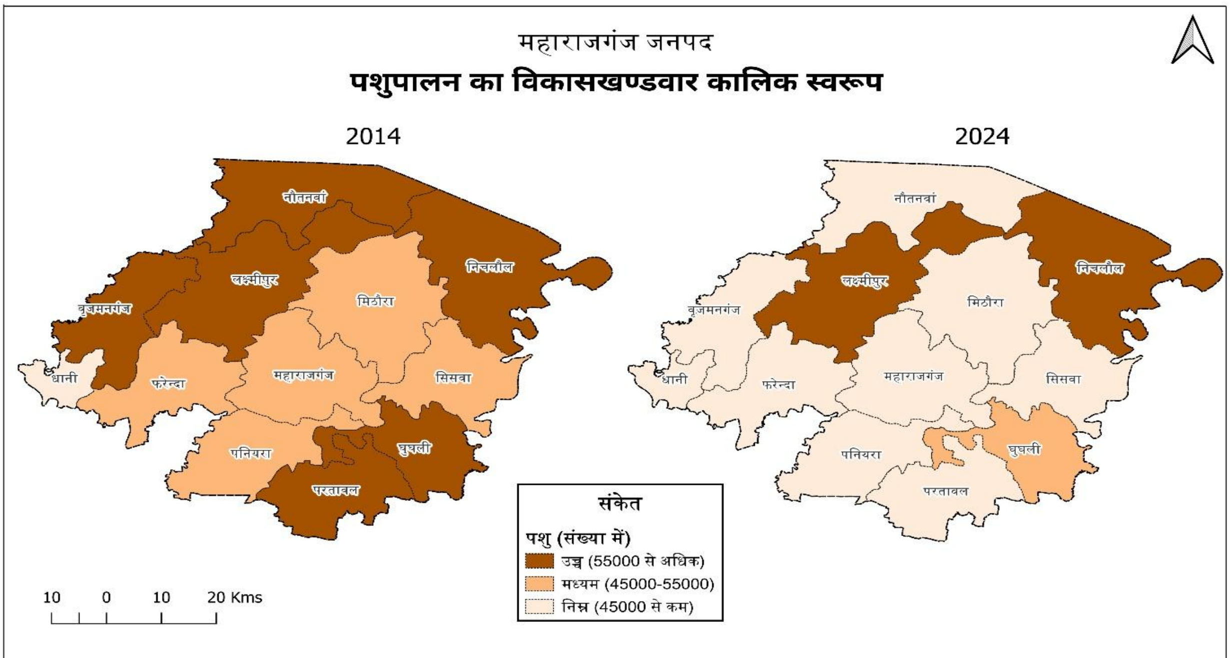

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, महाराजगंज जनपद, 2014-2024 एवं शोधार्थी द्वारा संगणित।

मानचित्र संख्या 5: महराजगंज जनपद में पशुपालन का विकासखण्डवार कालिक स्वरूप (2014–2024)।

भैंसों का अनुपात लगभग सभी विकासखण्डों में बढ़ा। धानी में यह 51.94 प्रतिशत से बढ़कर 61.91 प्रतिशत, जबकि महराजगंज में 36.38 प्रतिशत से 40.23 प्रतिशत हुआ। इसका प्रमुख कारण भैंस के दूध की उच्च बाजार मांग, दुग्ध सहकारी एवं स्थानीय बाजारों का विस्तार तथा व्यावसायिक डेयरी गतिविधियों का बढ़ना माना जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि बकरा–बकरी में हुई। घुघली में इनका हिस्सा 55.35 प्रतिशत से बढ़कर 60.56

प्रतिशत, मिठौरा में 50.00 प्रतिशत से 62.36 प्रतिशत तथा लक्ष्मीपुर में 39.36 प्रतिशत से 50.81 प्रतिशत हुआ। इसका कारण बकरी पालन के लिए कम पूँजी, कम भूमि एवं चारे की आवश्यकता, शीघ्र प्रजनन तथा ग्रामीण परिवारों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत होना है।

कुल पशुधन में कमी के बावजूद बकरी एवं भैंस आधारित पशुपालन का विस्तार यह दर्शाता है कि जनपद में पशुपालन धीरे–धीरे व्यावसायिक एवं आयोन्मुख स्वरूप ग्रहण कर रहा है। पशुधन की संख्या में कमी के पीछे कृ षि यंत्रीकरण, चरागाहों एवं पशु–चारे की उपलब्धता में कमी, पशुपालन की बढ़ती लागत तथा छोटे जोत आकार जैसे कारक भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। अतः भविष्य में उन्नत नस्ल, पशु–चिकित्सा, चारा विकास और दुग्ध विपणन सुविधाओं के विस्तार से पशुपालन की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्षः

महराजगंज जनपद में कृषि विकास का अध्ययन स्पष्ट करता है कि कृषि व्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों, सिंचाई, बाजार, तकनीकी सुविधाओं तथा कृषि से जुड़ी सहायक गतिविधियों के संयुक्त प्रभाव से निरंतर परिवर्तित हो रही है। वर्ष 2013–14 से 2023–24 के बीच सकल बोया गया क्षेत्रफल 3,61,664 हे० से बढ़कर 3,90,450 हे० हुआ। धान और गेहूँ का प्रभुत्व अभी भी कायम है, किंतु दलहन, मक्का, तिलहन तथा अन्य फसलों की बढ़ती हिस्सेदारी फसल विविधीकरण की दिशा में सकारात्मक संकेत देती है। विकासखण्डों के मध्य फसल प्रतिरूप में पर्याप्त अंतर पाया गया, जो सिंचाई, मिट्टी, बाजार पहुँच, फसल लाभप्रदता तथा स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों की भूमिका को स्पष्ट करता है। कृषि की सहायक गतिविधियों में मत्स्य पालन का सबसे उल्लेखनीय विस्तार हुआ। मत्स्य क्षेत्रफल 119.05 हे० से बढ़कर 2,378.92 हे० तथा उत्पादन 813 कुंतल से बढ़कर 1,00,200.04 कुंतल हो गया। यह तालाब विकास, जल संसाधनों की उपलब्धता, वैज्ञानिक मत्स्य पालन तथा सरकारी प्रोत्साहन की प्रभावशीलता को दर्शाता है। दूसरी ओर पशुधन संख्या में 6,74,355 से घटकर 5,06,663 की कमी आई, किंतु पशुधन संरचना में परिवर्तन हुआ। भैंस एवं बकरा–बकरी की हिस्सेदारी बढ़ना पशुपालन के अधिक व्यावसायिक और आयोन्मुख स्वरूप की ओर संकेत करता है।

फिर भी कृषि विकास के समक्ष छोटी एवं विखंडित जोत, सिंचाई की क्षेत्रीय असमानता, कृषि लागत में वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण बीज एवं तकनीकी ज्ञान की सीमित उपलब्धता, भंडारण एवं विपणन सुविधाओं की कमी, प्राकृतिक आपदाओं तथा बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। सीमांत एवं लघु कृषकों की कमजोर आर्थिक क्षमता आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने में बाधा बनती है। संतुलित एवं सतत कृषि विकास के लिए फसल विविधीकरण, विशेषकर दलहन, तिलहन, मक्का, सब्जियों एवं उच्च मूल्य वाली फसलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विकासखण्ड–विशिष्ट सिंचाई योजनाओं, सूक्ष्म सिंचाई एवं जल संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए। किसानों को उन्नत बीज, मृदा परीक्षण, जैविक एवं संतुलित उर्वरक तथा आधुनिक कृषि यंत्रों की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। मत्स्य पालन के लिए तालाबों का वैज्ञानिक प्रबंधन, उन्नत मत्स्य बीज एवं प्रशिक्षण तथा पशुपालन में नस्ल सुधार, चारा विकास, पशु–चिकित्सा और दुग्ध शीतकरण सुविधाओं का विस्तार आवश्यक है। साथ ही भंडारण, कोल्ड–चेन, ग्रामीण हाट, प्रसंस्करण इकाइयों तथा किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत किया जाना चाहिए। इन उपायों से कृषि उत्पादकता, कृषक आय, रोजगार और ग्रामीण आजीविका में वृद्धि करते हुए महराजगंज में अधिक संतुलित, समावेशी एवं सतत कृषि विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रथं सूचीः

- शर्मा, पी. (2020). कृषि आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन, भारतीय कृषि अर्थशास्त्र पत्रिका, 75(2), 145–160.

- कुमार, एस., एवं वर्मा, एल. (2019). हरित क्रांति का ग्रामीण विकास पर प्रभाव, ग्रामीण विकास समीक्षा, 12(1), 33–48.
- यादव, डी. एन. (2017). ग्रामीण रोजगार और कृषि क्षेत्र का संबंध, भारतीय सामाजिक विज्ञान जर्नल, 45(3), 201–215.
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. (2020). भारतीय कृषि की वर्तमान चुनौतियाँ. नई दिल्लीः आईसीएआर।
- पटेल, एम. (2016). लघु एवं सीमांत किसानों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण, कृषि नीति पत्रिका, 8(4), 55–70.
- चौधरी, ए., एवं मिश्रा, वी. (2019). जलवायु परिवर्तन और कृषि उत्पादकता, पर्यावरण और विकास, 14(2), 89–104.
- गुप्ता, आर. (2015). कृषि विपणन और ग्रामीण अवसंरचना. भारतीय अर्थव्यवस्था समीक्षा, 22(1), 112–126.
- शुक्ला, टी. (2018). महिला सशक्तिकरण और कृषि विकास. सामाजिक परिवर्तन अध्ययन, 9(3), 77–92.
- तिवारी, जे. (2017). कृषि विविधीकरण और आय वृद्धि. ग्रामीण प्रबंधन जर्नल, 6(2), 41–59.
- मिश्रा, पी., एवं सिंह, एल. (2016). कृषि शिक्षा और कौशल विकास, भारतीय शिक्षा एवं विकास पत्रिका, 11(4), 134–149.
- वर्मा, के. (2019). कृषि निर्यात और आर्थिक विकास. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अध्ययन, 18(1), 65–80.
- जोशी, ए. (2018). सहकारी समितियाँ और ग्रामीण समृद्धि, सहकारिता अध्ययन पत्रिका, 5(2), 23–38.
- पांडेय, एस. (2017). जैविक खेती और सतत विकास, पर्यावरणीय अर्थशास्त्र जर्नल, 13(3), 90–105.
- योजना आयोग. (2014). बारहवीं पंचवर्षीय योजना और कृषि क्षेत्र. नई दिल्लीः भारत सरकार।
- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक. (2021). ग्रामीण वित्त और कृषि निवेश रिपोर्ट, मुंबईः नाबार्ड।
- शर्मा, आर. के. (2015). भारत में कृषि प्रतिरूप का स्थानिक विश्लेषण. नई दिल्लीः अवध पब्लिकेशन।
- सिंह, वी. पी. (2016). कृषि विविधीकरण और क्षेत्रीय विकास. भारतीय भूगोल पत्रिका, 41(2), 123–134।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM